Toppersnotes®
Unleash the topper in you

Rajasthan – CET

स्नातक स्तर

सामान्य पात्रता परीक्षा (CET)

भाग - 4

सामान्य हिन्दी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	संधि	1
2	संज्ञा	17
3	सर्वनाम	19
4	विशेषण	20
5	क्रिया	21
6	कारक	28
7	अव्यय– अविकारी शब्द	31
8	समास	34
9	उपसर्ग	40
10	प्रत्यय	49
11	विलोम शब्द	57
12	पर्यायवाची	63
13	अनेकार्थक शब्द	65
14	विराम चिन्ह	68
15	पारिभाषिक शब्दावली	71
16	वाक्य रचना	77
17	मुहावरे	81
18	लोकोक्तियाँ	87
19	कार्यालयी एवं सरकारी पत्र	90
20	Article (लेख)	99
21	Time and Tense (समय और काल)	103
22	Voice (वाच्य)	107
23	Narration (कथन)	111

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	Preposition (उपसर्ग)	120
25	Translation	137
26	Antonyms & Synonyms (विलोम और पर्यायवाची शब्द)	141
27	Comprehension Passage (अपठित गद्यांश)	153
28	Glossary of Official & Technical Terms (आधिकारिक, तकनीकी शब्दों की शब्दावली)	162
29	Letter Writing (पत्र लेखन)	190
30	Idioms & Phrases (मुहावरे और वाक्यांश)	199
31	One Word Substitution (एक शब्द प्रतिस्थापन)	212

1 CHAPTER संधि

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति + एक
विद्यालय	–	विद्या + आलय
जगदीश	–	जगत् + ईश
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

जैसे–

वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
रमा	+	ईश	=	रमेश
आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ।

संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

जैसे–

शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

संधि के भेद		
स्वर संधि	**व्यंजन संधि**	**विसर्ग संधि**
(स्वर + स्वर का मेल) महा + आत्मा (आ + आ)	स्वर + व्यंजन → परि + छेद (इ + छ) व्यंजन + स्वर → दिक् + अम्बर (क् + अ) व्यंजन + व्यंजन → सत् + वाणी (त् + व्)	विसर्ग + स्वर → मनः + अविराम (: + अ) विसर्ग + व्यंजन → तपः + वन (: + व्)

1. स्वर संधि

स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी

आ + अ = आ

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते है–

स्वर संधि के भेद

दीर्घ संधि | गुण संधि | वृद्धि संधि | यण संधि | अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, के बाद वे ही (अर्थात् समान) लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं।

(अ + अ = आ)

अ + अ = आ	(i) युग + अन्तर = युगान्तर युग् अ + अन्तर युगान्तर युग् आ न्तर युग् अ + अन्तर युग + अन्तर	(ii) स्व + अर्थ = स्वार्थ स्व् अ + अर्थ आ स्व् आ र्थ स्वार्थ
अ + आ = आ	(i) हिम + आलय = हिमालय हिम् अ + आ लय आ हिम् आ लय हिमालय	(ii) गमन + आगमन = गमनागमन गमन् अ + आगमन आ गमन् आ गमन गमना गमन
आ + अ = आ	(i) तथा + अपि = तथापि तथ् आ + अ पि आ त थ् आ पि तथापि	(ii) महा + अमात्य = महामात्य मह् आ + अमात्य आ म ह् आ मात्य महामात्य
आ + आ = आ	(i) प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद प्रेरण् आ + आ स्पद आ प्रेरण् आ स्पद प्रेरणास्पद	(ii) चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय चिकित्स् आ + आलय आ चिकित्स् आ लय चिकित्सालय
इ + इ = ई	(i) अति + इव = अतीव अत् + इव ई अत् + ई व अतीव	(ii) कवि + इन्द्र = कवीन्द्र क व् इ + इन्द्र ई क व् ई न्द्र कवीन्द्र
इ + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा प्रत् इ + ईक्षा ई प्र त् ई क्षा प्रतीक्षा	
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र मह् ई + इन्द्र ई मह् इन्द्र महीन्द्र	
ई + ई = ई	नारी + ईश्वर = नारीश्वर ना र् ई + ईश्वर नार् ई श्वर नारीश्वर	

Toppersnotes Unleash the topper in you

उ + उ = ऊ	गुरू + उपदेश = गुरूपदेश गुर् उ + उपदेश ऊ गुर् + ऊ पदेश गुरूपदेश	
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ल घ् उ + ऊर्मि ऊ लघ् ऊ र्मि लघूर्मि	
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि सरय् ऊ + ऊर्मि ऊ सरय् उ र्मि सरयूर्मि	
ऋ + ऋ = ॠ	पितृ + ऋण = पितृण पित् ऋ + ऋण ॠ पित् ॠ ण पितृण	

नोट – ऐसे ऋ वाली संधियो से बने दीर्घ ॠ वाले शब्द हिन्दी में प्रचलित नही है।

दीर्घ संधि के उदाहरण

अन्नाभाव	–	अन्न + अभाव	अ + अ = आ	परम + अर्थ = परमार्थ
भोजनालय	–	भोजन + आलय	अ + आ = आ	
विद्यार्थी	–	विद्या + अर्थी	आ + अ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
गिरीन्द्र	–	गिरि + इन्द्र	इ + इ = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
गिरीश	–	गिरि + ईश	इ + ई = ई	
रजनीश	–	रजनी + ईश	ई + ई = ई	
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	मुनी + इन्द्र = मुनीन्द्र
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	अभीप्सा = अभि + ईप्सा
रामावतार	–	राम + अवतार	अ + अ = आ	भय + आक्रांत = भयाकृांत
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	स्नेह + आविष्ट = स्नेहाविष्ट
रामायण	–	राम + अयन	अ + अ = आ	न का ण में परिवर्तित
धर्माधर्म	–	धर्म + अधर्म	अ + अ = आ	
पराधीन	–	पर + अधीन	अ + अ = आ	
पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष	अ + अ = आ	

दैत्यारि	–	दैत्य + अरि	अ + अ = आ	
शताब्दी	–	शत + अब्दी	अ + अ = आ	
धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ	अ + अ = आ	
मुरारि	–	मुर + अरि	अ + अ = आ	
नीलाम्बर	–	नील + अम्बर	अ + अ = आ	
परमार्थ	–	परम + अर्थ	अ + अ = आ	
रूद्राक्ष	–	रुद्र + अक्ष	अ + अ = आ	
स्वाधीन	–	स्व + अधीन	अ + अ = आ	
गीताजंली	–	गीत + अंजली	अ + अ = आ	
दीपावली	–	दीप + अवली	अ + अ = आ	
प्रार्थी	–	प्र + अर्थी	अ + अ = आ	
छिद्रान्वेषी	–	छिद्र + अन्वेषी	अ + अ = आ	
मूल्यांकन	–	मूल्य + अंकन	अ + अ = आ	
अन्त्याक्षरी	–	अंत्य + अक्षरी	अ + अ = आ	
सापेक्ष	–	स + अपेक्ष	अ + अ = आ	
अभयारण्य	–	अभय + अरण्य	अ + अ = आ	
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	
नारायण	–	नर + अयन	अ + अ = आ	कंटक + आकीर्ण = कंटाकाकीर्ण
परमात्मा	–	परम + आत्मा	अ + आ = आ	
पदावलि	–	पद + अवलि	अ + आ = आ	
रत्नाकर	–	रत्न + आकर	अ + आ = आ	
निगमागमन	–	निगम + आगमन	अ + आ = आ	
पद्माकर	–	पद्म + आकर	अ + आ = आ	
शरणागत	–	शरण + आगत	अ + आ = आ	
सत्याग्रह	–	सत्य + आग्रह	अ + आ = आ	
विद्याध्ययन	–	विद्या + अध्ययन	आ + अ = आ	
परीक्षार्थी	–	परीक्षा + अर्थी	आ + अ = आ	
रेखांकित	–	रेखा + अंकित	आ + अ = आ	
मुक्तावली	–	मुक्ता + अवली	आ + अ = आ	
दावानल	–	दावा + अनल	आ + अ = आ	
तथापि	–	तथा + अपि	आ + अ = आ	
महाशय	–	महा + आशय	आ + आ = आ	
द्राक्षासव	–	द्राक्षा + आसव	आ + आ = आ	
विद्यालय	–	विद्या + आलय	आ + आ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
प्रेरणास्पद	–	प्रेरणा + आस्पद	आ + आ = आ	
कवीन्द्र	–	कवि + इन्द्र	इ + इ = ई	
अतिव	–	अति + इव	इ + इ = ई	

अभीष्ट	–	अभि + इष्ट	इ + इ = ई	
अतीव	–	अति + इत	इ + ई = ई	
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
महतीच्छा	–	महती + इच्छा	ई + इ = ई	
कपीश	–	कपि + ईश	इ + ई = ई	
प्रतीक्षा	–	प्रति + ईक्षा	इ + ई = ई	
अधीक्षण	–	अधि + इक्षण	ई + इ = ई	
अभीप्सा	–	अभि + ईप्सा	इ + ई = ई	
नारीश्वर	–	नारी + ईश्वर	ई + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
सतीश	–	सती + ईश	ई + ई = ई	
लघूत्तम	–	लघु + उत्तम	उ + उ = ऊ	
सूक्ति	–	सु + उक्ति	उ + उ = ऊ	
अनूदित	–	अनु + उदित	उ + उ = ऊ	
गुरूपदेश	–	गुरु + उपदेश	उ + उ = ऊ	
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	
सिंधूर्मि	–	सिंधु + ऊर्मि	उ + ऊ = ऊ	
भानूर्जा	–	भानु + ऊर्जा	उ + ऊ = ऊ	
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	
चमूत्तम	–	चमू + उत्तम	ऊ + उ = ऊ	
मातृण	–	मातृ + ऋण	ऋ + ऋ = ॠ	
होतृकार	–	होतृ + ऋकार	ऋ + ऋ = ॠ	

दीर्घ संधि की पहचान

दीर्घ संधि युक्त शब्दों में अधिकांश आ, ई, ऊ की मात्राएँ (ा, ी, ू) आती है और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से किया जाता है। जैसे – विद्यालय – विद्या + आलय

अपवाद

शक + अन्धु = शकन्धु मूसल + धार = मूसलाधार

कर्क + अन्धु = कर्कन्धु मनस् + ईषा = मनीषा

विश्व + मित्र = विश्वामित्र युवन् + अवस्था = युवावस्था

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते है।
  जैसे– देवेन्द्र – देव + इन्द्र (अ + इ = ए)
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।
  जैसे– वीरोचित – वीर + उचित (अ + उ = ओ)
- अ, आ के बाद ऋ, आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
  जैसे–महर्षि–महा + ऋषि (आ + ऋ = अर)

गुण संधि की पहचान

गुण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ए, ओ की मात्राएँ (े, ो) या र् आता है (र्) और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

गुण संधि को समझाने का तरीका

अ + इ = ए	गज + इन्द्र = गजेन्द्र गज् अ + इन्द्र ए गज् ऐ न्द्र गजेन्द्र नर + इन्द्र = नरेन्द्र

	नर् अ इ न्द्र ए नर् ए न्द्र नरेन्द्र
अ + उ ओ	पर + उपकार = परोपकार पर् अ + उपकार ओ पर् ओ प कार परोपकार
आ + ऊ ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि गंग् आ + उर्मि ओ गंग् ओ र्मि गंगोर्मि
अ + ऋ अर्	सप्त + ऋषि सप्तर्षि सप्त् अ + ऋषि अर् सप्त् अर् षि सप्तर्षि
आ + ऋ अर्	वर्षा + ऋतु वर्षर्तु वर्ष अ + ऋतु अर् वर्ष अर्, तु वर्षर्तु

उदाहरण

गणेश	– गण + ईश	अ + ई = ए
यथेष्ट	– यथा + इष्ट	आ + इ = ए
रमेश	– रमा + ईश	आ + ई = ए
जलोर्मि	– जल + ऊर्मि	अ + ऊ = ओ
गंगोर्मी	– गंगा + ऊर्मि	आ + ऊ = ओ
शुभेच्छा	– शुभ + इच्छा	अ + इ = ए
नरेश	– नर + ईश	अ + ई = ए
जलोष्मा	– जल + ऊष्मा	अ + ऊ = ओ
सप्तर्षि	– सप्त + ऋषि	अ + ऋ = अर्
नरेन्द्र	– नर + इन्द्र	अ + इ = ए
भारतेन्दु	– भारत + इन्दु	अ + इ = ए
मृगेन्द्र	– मृग + इन्द्र	अ + इ = ए
स्वेच्छा	– स्व + इच्छा	अ + इ = ए
देवेन्द्र	– देव + इन्द्र	
प्रेषिती	– प्र + ईषिती	
इतरेतर	– इतर + इतर	
अंत्येष्टि	– अन्त्य + इष्टि	
नृपेन्द्र	– नृप + इन्द्र	
महेन्द्र	– महा + इन्द्र	
अपेक्षा	– अप + ईक्षा	
प्रेक्षक	– प्र + ईक्षक	
राकेश	– राका + ईश	
गुड़ाकेश	– गुड़ाका + ईश	
सूर्योदय	– सूर्य + उदय	
सोदाहरण	– स + उदाहरण	
आद्योपान्त	– आद्य + उपान्त	
प्राप्तोदक	– प्राप्त + उदक	
जन्मोत्सव	– जन्म + उत्सव	
अन्योक्ति	– अन्य + उक्ति	
नीलोत्पल	– नील + उत्पल	
परोपकार	– पर + उपकार	
सर्वोदय	– सर्व + उदय	
अन्त्योदय	– अन्त्य + उदय	
महोदय	– महा + उदय	
महोत्सव	– महा + उत्सव	
जलोर्मि	– जल + ऊर्मि	
जलोष्मा	– जल + ऊष्मा	
देवर्षि	– देव + ऋषि	
हेमन्तर्तु	– हेमन्त + ऋतु	
शीतर्तु	– शीत + ऋतु	
शिशिरर्तु	– शिशिर + ऋतु	
उत्तमर्ण	– उत्तम + ऋण	
अधमर्ण	– अधम + ऋण	
राजर्षि	– राज + ऋषि	
महर्ण	– महा + ऋण	
महर्तु	– महा + ऋतु	
तवल्कार	– तव + लृकार	

गुण संधि से संबंधित विगत परीक्षाओं में पूछे गए महत्वपूर्ण प्रश्न

महा + उत्सव = महोत्सव

मम + इतर = ममेतर

Toppersnotes Unleash the topper in you

नव + ऊढा = नवोढा

वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु

नोट

अपवाद

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी ऊह आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– प्रौढ़–प्र + ऊढ
  प्र + उह = प्रौह
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे–
  अक्षौहिणी–अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आनें पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।
  जैसे– एकैक – एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।
  जैसे– महौषधि – महा + औषधि

अ/आ – ए/ऐ = ऐ	एक + एक = एकैक एक् अ + एक ऐ एक् ऐ क एकैक महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य मह् आ + ऐ श वर्य ऐ मह् ऐ श्वर्य महैश्वर्य
अ/आ – ओ/औ = औ	परम + औज = परमौज परम् अ + औज औ परम् औ ज परमौज
	महा + औषधि = महौषधि मह् आ + औषधि औ मह् औ षधि महौषधि

उदाहरण

1.	परमैश्वर्य	–	परम + ऐश्वर्य
2.	सदैव	–	सदा + एव
3.	महैश्वर्य	–	महा + ऐश्वर्य
4.	परमौज	–	परम + ओज
5.	महौजस्वी	–	महा + ओजस्वी
6.	वनौषध	–	वन + औषध
7.	महौषध	–	महा + औषध
8.	लोकैषणा	–	लोक + एषणा
9.	हितैषी	–	हित + एषी
10.	तथैव	–	तथा + एव
11.	वसुधैव	–	वसुधा + एव
12.	मतैक्य	–	मत + ऐक्य
13.	विचारैक्य	–	विचार + ऐक्य
14.	गंगौक	–	गंगा + ओक
15.	महौज	–	महा + ओज
16.	जलौषधि	–	जल + औषधि
17.	परमौत्सुक्य	–	परम + औत्सुक्य
18.	देवौदार्य	–	देव + औदार्य
19.	विश्वैक्य	–	विश्व + ऐक्य
20.	स्वैच्छिक	–	स्व + ऐच्छिक

वित + एषणा वितैषणा

परम + एन्द्रजालिक – परमैन्द्रजालिक

गंगा + ऐश्वर्य – गंगैश्वर्य

परम + औदार्य – परमौदार्य

परम + औपचारिक – परमौपचारिक

मृदा + औषधि – मृदौषधि

वृद्धि संधि की पहचान

वृद्धि संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ऐ, औ की मात्राएं (ै, ौ) आती है और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से होता है।

अपवाद

बिम्ब + ओष्ठ – बिम्बोष्ठ

अधर + ओष्ठ – अधरोष्ठ

दन्त + ओष्ठ – दतोष्ठ

वृद्धि संधि के विशेष नियम

यदि ऋण/दश/वसन/प्र/कंबल/वत्सतर के साथ ऋण शब्द का मेल हो रहा हो तो वहाँ वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि हो जाती है।

दश + ऋण = दशार्ण (वृद्धि संधि)

वसन + ऋण = वसनार्ण (वृद्धि संधि)

प्र + ऋण = प्राण (वृद्धि संधि)

कम्बल + ऋण = कम्बलार्ण (वृद्धि संधि)

वत्सतर + ऋण = वत्सतरार्ण (वृद्धि संधि)

इन शब्दों के अलावा अन्य किसी शब्द के साथ ऋण शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि मान्य होगी।

जैसे – उत्तमर्ण = उत्तम + ऋण

महर्ण = महा + ऋण

स्वर शब्द के साथ ईर/ईरी/ईरिणी शब्दों का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'ए' किया जाता है व संधि होगी।

जैसे – स्व + ईर = स्वैर (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि होगी।

पिपासा + ऋत = पिपासार्त (वृद्धि)

सुख + ऋत = सुखार्त (वृद्धि)

'परम' शब्द के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि हो जाती है।

परम + ऋत = परमर्त (गुण संधि)

किसी भी अकारान्त उपसर्ग प्र/उप/अप/अव के साथ 'ऋ' स्वर से आरम्भ होने वाली क्रियापद (ऋच्छति) का मेल होने पर वृद्धि पर एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि होगी।

जैसे – प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति (वृद्धि संधि)

उप + ऋच्छति = उपार्च्छति (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ ऐहि/ओम/ओदन शब्दों का मेल होने पर केवल संयोग कार्य ए/ओ किया जाता है।

शिव + एहि = शिवेहि (संयोग)

शुक + ओदन = शुकोदन (संयोग)

शिवाय + ओम = शिवायोम (संयोग)

अ/आ स्वर के साथ ओष्ठ/ओतु शब्द का मेल होने पर विकल्प से वृद्धि एकादेश 'औ' तथा संयोग कार्य 'ओ' दोनों किए जा सकते है।

जैसे –

कण्ठ + ओष्ठ = कठौष्ठ (वृद्धि), कंठोष्ठ (संयोग)

दन्त + ओष्ठ = दन्तौष्ठ (वृद्धि), दंतोष्ठ (संयोग)

(iv) यण संधि

- यदि इ या ई, उ या ऊ, तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो–
  इ, ई का य, उ, ऊ का व, ऋ का र हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य, व, र में लग जाती है।

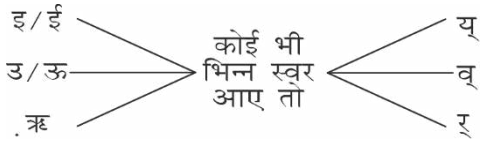

उदाहरण

1.	अत्यधिक	–	अति + अधिक
2.	इत्यादि	–	इति + आदि
3.	नद्यागम	–	नदी + आगम
4.	अत्युत्तम	–	अति + उत्तम
5.	अत्यूष्म	–	अति + ऊष्म
6.	प्रत्येक	–	प्रति + एक
7.	स्वच्छ	–	सु + अच्छ
8.	स्वागत	–	सु + आगत
9.	अन्वेषण	–	अनु + एषण
10.	अन्विति	–	अनु + इति
11.	पित्राज्ञा	–	पितृ + आज्ञा
12.	अत्यल्प	–	अति + अल्प
13.	व्यसन	–	वि + असन
14.	अध्यक्ष	–	अधि + अक्ष
15.	पर्यंक	–	परि + अंक
16.	अभ्यर्थी	–	अभि + अर्थी
17.	अभ्यंतर	–	अभि + अंतर
18.	व्यय	–	वि + अय
19.	पर्यवेक्षक	–	परि + अवेक्षक
20.	व्यर्थ	–	वि + अर्थ
21.	अत्यन्त	–	अति + अन्त
22.	प्रत्यक्ष	–	प्रति + अक्ष
23.	रीत्यनुसार	–	रीति + अनुसार
24.	व्यवहार	–	वि + अवहार
25.	न्यस्त	–	नि + अस्त
26.	अध्ययन	–	अधि + अयन
27.	प्रत्यय	–	प्रति + अय
28.	गत्यवरोध	–	गति + अवरोध
29.	गत्यनुसार	–	गति + अनुसार
30.	व्यष्टि	–	वि + अष्टि
31.	प्रत्यर्पण	–	प्रति + अर्पण
32.	अभ्यागत	–	अभि + आगत
33.	प्रत्याशा	–	प्रति + आशा
34.	अत्याचार	–	अति + आचार
35.	व्याकुल	–	वि + आकुल
36.	अभ्यास	–	अभि + आस
37.	अत्यावश्यक	–	अति + आवश्यक

Toppersnotes Unleash the topper in you

38. व्यापक – वि + आपक
39. पर्याप्त – परि + आप्त
40. पर्यावरण – परि + आवरण
41. अध्यादेश – अधि + आदेश
42. व्यास – वि + आस
43. व्याप्त – वि + आप्त
44. न्याय – नि + आय
45. व्याकरण – वि + आकरण
46. व्यायाम – वि + आयाम
47. व्याधि – वि + आधि
48. प्रत्यारोपण – प्रति + आरोपण
49. अभ्युदय – अभि + उदय
50. प्रत्युत्तर – प्रति + उत्तर
51. उपर्युक्त – उपरि + उक्त
52. प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
53. न्यून – नि + ऊन
54. अत्यैश्वर्य – अति + ऐश्वर्य
55. देव्यपर्ण – देवी + अर्पण
56. नद्यपर्ण – नदी + अर्पण
57. देव्यागमन – देवी + आगमन
58. नार्युचित – नारी + उचित
59. स्त्र्युचित – स्त्री + उचित
60. स्त्र्युपयोगी – स्त्री + उपयोगी
61. नद्युर्मि – नदी + ऊर्मि
62. अत्यौचित्य – अति + औचित्य
63. स्वल्प – सु + अल्प
64. मन्वन्तर – मनु + अन्तर
65. स्वच्छ – सु + अच्छ
66. मध्वरि – मधु + अरि
67. तन्वंगी – तनु + अंगि
68. स्वस्ति – सु + अस्ति
69. गुर्वादेश – गुरु + आदेश
70. गुर्वाज्ञा – गुरु + आज्ञा
71. वध्वागमन – वधू + आगमन
72. अन्विति – अनु + इति
73. अन्वीक्षण – अनु + ईक्षण
74. अन्वीक्षा – अनु + ईक्षा
75. गुर्वौदार्य – गुरु + औदार्य
76. पित्रनुमति – पितृ + अनुमति
77. मात्राज्ञा – मातृ + आज्ञा
78. पित्रादेश – पितृ + आदेश
79. वक्त्रुद्बोधन – वक्तृ + उद्बोधन
80. लाकृति – लृ + आकृति
81. सुध्युपास्य – सुधि + उपास्य
82. त्र्यम्बकम – त्रि + अम्बकम
83. स्वस्त्ययन – स्वस्ति + अयन

यण संधि की पहचान

यण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत य, व, र से पहले आधा वर्ण आता है और इनका विच्छेद इन्ही वर्णो से किया जाता है।

शब्द में आधा अक्षर + य, व, र, लिखा हुआ है तो –
आधे अक्षर को पूरा लिख दो
य, व, र के अनुसार मात्रा लगा दो
य हो तो इ/ई की मात्रा
व हो तो उ/ऊ की मात्रा
र हो तो ऋ की मात्रा

य, व, र को छोड़कर शेष, शब्दांश + के आगे लिख दो।

अधि + अधिन = अध्यधीन
देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

नोट – यदि किसी शब्द के आरम्भ मे 'स्व' शब्दांश लिखा हुआ है एवम उसका अर्थ अपना/अपनी/अपने प्रकट हो रहा है तो वहाँ संधि विच्छेद करते समय 'स्व' शब्दांश को + से पहले लिखना चाहिए एवं + के बाद यण संधि के अलावा अन्य संधि नियमों के अनुसार शब्द लिखना चाहिए।

स्व + अर्थी = स्वार्थी (दीर्घ संधि)
स्व + अवलम्बन = स्वावलम्बन (यण संधि)
स्व + इच्छा = स्वेच्छा (गुण संधि)
स्वः + ग = स्वर्ग (विसर्ग संधि)
सत्य + आग्रह = सत्याग्रह (दीर्घ संधि)

(v) अयादि संधि

- यदि 'ए' या 'ऐ' 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय्, ऐ का आय् हो जाता है।
  जैसे– नयन – ने + अन
  नायक – नै + अक
- ओ का अव, औ का आव हो जाता है।
  जैसे–
  पवन – पो + अन
  पावक – पौ + अक

ए	ओ	ऐ	औ
↓	↓	↓	↓
अय्	अव्	आय्	आव् हो जाता है।

ऐ – अय	ऐ – आय
ने + अन नयन न् ए + अन ↓ अय् न् अय् अ न नयन	गै + इका गायिका ग् ऐ + इका ↓ आय ग् आय् इका गायिका
ओ – अव्	**औ – आव**
हो + अन – हवन ह् ओ + अन ↓ अव् ह् अव् अन हवन	पौ + अन त्र पावन प् औ + अन ↓ आव् प् आव् अन पावन

उदाहरण

1. भवन – भो + अन
2. संचय – संचे + अ
3. शयन – शे + अन
4. नय – ने + अ
5. विजयिनी – विजे + इनी
6. विनायक – विनै + अक
7. पायक – पै + अक
8. गायक – गै + अक
9. विधायक – विधै + अक
10. सायक – सै + अक
11. हवन – हो + अन
12. गवीश – गो + ईश
13. श्रवण – श्रो + अन
14. विभव – विभो + अ
15. भविष्य – भो + इष्य
16. पवित्र – पो + इत्र
17. वटवृक्ष – वटो + वृक्ष
18. श्रावक – श्रौ + अक
19. धाविका – धौ + इका
20. अय – ए + आ
21. चयन – चे + अन
22. नयन – ने + अन
23. गायन – गै + अन
24. शायक – शै + अक
25. भवति – भो + अति
26. भाव – भौ + अ
27. आवि – औ + अ
28. भावुक – भौ + उक
29. शाविक – शौ + इक
30. दायिनी – दै + इनी
31. द्वावेव – द्वौ + एव

नोट – विधायिका – विधै +इका

कुछ शब्द ऐसे होते है जिसमें एक से अधिक संधि भी होती है।

गवेन्द्र– गो + इन्द्र – अयादि
गव + इन्द्र – गुण
गवाक्ष – गो + अक्ष – अयादि
गव + अक्ष – गुण

अपवाद

पो + इत्र = पवित्र (अयादि) → अव् – ओ का नियम **(LDC - 2022)**

पू + इत्र = पवित्र (यण) → ऊ + ई = वि का नियम

कुछ इतिहासकारों नें स्वर संधि के अन्य रूपों को भी स्वीकार किया है जो निम्न है–

पररूप संधि

यदि किसी शब्द के अन्त में अ, आ के बाद ए, ओ में से कोई एक वर्ण हो तो पदान्त अ, आ का पररूप एका देश ओ जाता है।

जैसे –

दन्तोष्ठ – दन्त + ओष्ठ
शुद्धोदन – शुद्ध + ओदन
अधरोष्ठ – अधर + ओष्ठ
बिम्बोष्ठ – बिम्ब + ओष्ठ

पूर्व रूप

यदि पद के अन्त में ए, ओ के बाद हस्व 'अ' हो तो अ का पूर्व एकादेश हो जायेगा तथा विकल्प से 'अ' के लुप्त पद स्थान पर अवग्रह 'अ' (ऽ) हो जायेगा।

जैसे –

मनोऽभिलाषा / मनोभिलाषा – मनो + अभिलाषा
यशोऽधिकार / यशोधिकार – यशो + अधिकार
मनोऽभिमान / मनोभिमान – मनो + अभिमान
सोऽपि / सोपि – सो + अपि

स्वर संधि के विशेष नियम

- यदि पदान्त अ के परे अ हो तो विकल्प से अ + अ = अ हो जाता है।

जैसे –

पतंजलि – पतत् + अंजलि
कुलटा – कुल + अटा
अपंग – अप + अंग
सारंग – सार + अंग
सीमत – सीम + अन्त
मार्तण्ड – मार्त + अंड
कर्कन्धु – कर्क + अंधु
मनीषा – मनस् + ईषा

- जिन शब्दों के अन्त में अक्ष व रात्र पद लिखा हो तो संधि विच्छेद करते समय अक्ष का अक्षि, रात्र का रात्रि हो जाता है।

जैसे –

प्रत्यक्ष	–	प्रति + अक्षि
सहस्त्राक्ष	–	सहस्त्र + अक्षि
नवरात्र	–	नव + रात्रि

2. व्यंजन संधि

व्यंजन संधि में एक व्यंजन का किसी दूसरे व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर दोनों मिलने वाली ध्वनियों में विकार उत्पन्न हो जाता है। इस विकार से होने वाली संधि को व्यंजन संधि कहते है।

जैसे – व्यंजन + व्यंजन – व्यंजन
व्यंजन + स्वर – व्यंजन
स्वर + व्यंजन – व्यंजन

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम निम्नलिखित है–

नियम – 01

- यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् क, च, ट, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो क, च, ट्, त्, प् के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात् ग, ज, ड, द, ब हो जाता है।
- (क् च् ट् त् प्)
  ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
  ग् ज् ड् द् ब्
  + (ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ, य, व, र, ल) + स्वर

जैसे

वागीश	–	वाक् + ईश
दिग्गज	–	दिक् + गज
वाग्दान	–	वाक् + दान
सद्वाणी	–	सत् + वाणी
अजंत	–	अच् + अंत
अबिंधन	–	अप् + इंधन
तद्रूप	–	तत् + रूप
जगदानन्द	–	जगत् + आनन्द
शब्द	–	शप् + द
जगदीश	–	जगत् + ईश
अब्ज	–	अप् + ज
प्रागैतिहासिक	–	प्राक् + ऐतिहासिक
वाग्जाल	–	वाक् + जाल
सद्गति	–	सत् + गति
दिग्विजय	–	दिक् + विजय
षडानन	–	षट् + आनन
ऋग्वेद	–	ऋक् + वेद
उद्घोष	–	उत् + घोष
सुबन्त	–	सुप् + अन्त
वागीश्वरी	–	वाक् + ईश्वरी
चिदानन्द	–	चित् + आनन्द
सदाचार	–	सत् + आचार
षड्दर्शन	–	षट् + दर्शन
वागदन्ता	–	वाक् + दत्ता
दिगम्बर	–	दिक् + अम्बर
सद्वाणी	–	सत् + वाणी
उद्दंड	–	उत् + दंड
उद्धृत	–	उत् + धृत
सदानन्द	–	सत् + आनन्द
जगदम्बा	–	जगत् + अम्बा
वाग्हरि/वाग्धरी	–	वाक् + हरि
वृहदारण्यक	–	वृहत् + आरण्यक
सदुपयोग	–	सत् + उपयोग
सच्चिदानन्द	–	सत् + चित् + आनन्द सच्चित् + आनन्द

पश्चात्	+ वर्ती	= पश्चादवर्ती
सत्	+ धर्म	= सद्धर्म
महत	+ इच्छा	= महदिच्छा
सत्	+ व्यवहार	= सद्व्यवहार
सत्	+ विचार	= सद्विचार
अप्	+ धि	= अब्धि

यदि पद के अन्त में स्, त, थ, द, ध, न के बाद श्, च, छ, ज, झ, ञ में से कोई वर्ण हो तो पद के अन्त में आए स्, त, थ, द, ध, न के स्थान पर क्रमशः श्, च, छ, ज, झ, ञ हो जायेगा।

- त्, थ्, द्, ध्, न्, स्
  ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ का नियम
  च् छ् ज् झ् ञ् श्

जैसे –

रामश्शेते	– रामस् + शेते
सच्चित	– सत् + चित
शरच्चन्द्र	– शरत् + चन्द्र
सच्चरित्र	– सत् + चरित्र

Toppersnotes Unleash the topper in you

नोट –

कुछ उदाहरण ऐसे होते है जो उपर्युक्त दोनों नियमों से भी बनते हैं जो निम्न है –

उज्ज्वल	–	उद् + ज्वल
विपज्जाल	–	विपत्/विपद् + जाल
जगज्जननी	–	जगत् + जननी
यावज्जीवन	–	यावत् + जीवन
उच्चारण	–	उत् + चारण
महच्छत्र	–	महत् + छत्र
सज्जन	–	सत् + जन
		सद् + जन

- पद के अन्त में त् के बाद न् होने पर त् के स्थान पर न् हो जाता है।

जैसे –

जगन्नाथ	–	जगत् + नाथ
श्री मन्नारायण	–	श्रीमद् + नारायण
उन्नयन	–	उत् + नयन
जगन्निवास	–	जगत् + निवास
उन्नति	–	उत् + नति

- यदि पद के अन्त में स्, त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद में ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् हो तो

स त थ द ध न + ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓हो जाता है।

ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

जैसे –

तट्टीका	–	तत् + टीका
रामष्षष्ठ	–	रामस् + षष्ठ
उड्डीयते	–	उत् + डीयते
उड्डयन	–	उत्/उड् + डयन

- यदि पद के अन्त में त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद ल हो तो पद के अन्त में स्थित त, थ, द, ध, न के स्थान पर ल् हो जाता है।

जैसे –

पल्लव	–	पत्/पद् + लव
उल्लास	–	उत् + लास
उल्लेख	–	उत् + लेख
उल्लंघन	–	उत् + लंघन
तल्लीन	–	तत् + लीन
विद्युल्लेखा	–	विद्युत + लेखा
विदॉल्लिखित	–	विद्वान + लिखित

- यदि पद के अन्त में त् हो व उसके बाद 'ह' हो तो त् के स्थान पर 'द' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जायेगा।

जैसे –

उद्धार	–	उत् + हार
उद्धरण	–	उत् + हरण
तद्धित	–	तत् + हित
पद्धति	–	पत् + हति
उत् + हल	–	उद्धत
उत् + हृत	–	उद्धृत

- यदि पद के अन्त में क्, च्, ट्, त्, प् में से कोई वर्ण हो व उसके बाद कोई नासिक्य वर्ण ङ्, ञ्, ण्, न्, म् हो तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर आए हुए वर्ण के वर्ग का पंचम अक्षर हो जायेगा।

क् च् ट् त् प् + ङ्, ञ्, ण्, न्, म्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ङ् ञ् ण् न् म्

जैसे –

एतन्मुरारि	–	एतत् + मुरारि
षण्णाम	–	षट् + णाम
षण्मुख	–	षट् + मुख
मृण्मय	–	मृट + मय
सन्मार्ग	–	सत् + मार्ग
उन्मुख	–	उत् + मुख
तन्मय	–	तत् + मय
सन्मति	–	सत् + मति
दिङ्नाग	–	दिक् + नाग
अम्मय	–	अप् + मय
षण्मातुर	–	षट् + मातुर
उन्नयन	–	उत् + नयन
उन्मीलित	–	उत् + मीलित
उन्नायक	–	उत् + नायक
उन्नति	–	उत् + नति
विद्युन्माला	–	विद्युत् + माला
सन्नारी	–	सत् + नारी
तन्मात्र	–	तत् + मात्र
उन्मूलित	–	उत् + मूलित
वाक् + मय	=	वाङ्मय
वाक् + मुख	=	वाङ्मुख
जगत् + नाथ	=	जगन्नाथ
जगत् + माता	=	जगन्माता
उत् + मूलन	=	उन्मूलन
बृहत + नल	=	बृहन्नल
चित् + मय	=	चिन्मय
सत् + निधि	=	सन्निधि
बृहत + माला	=	बृहन्माला

- यदि पद के अन्त में त् या द के बाद श् हो तो त् या द का च् और श् के स्थान पर छ् हो जायेगा।

जैसे –

उच्छवास	–	उत् + श्वास
उच्छिष्ट	–	उत् + शिष्ट
तच्छिव	–	तत् + शिव
उच्छृंखल	–	उत् + शृंखल
श्रीमच्छरच्चन्द	–	श्रीमत् + शरत् + चन्द्र

20 CHAPTER ARTICLE (लेख)

Article

Indefinite - A/An **Definite – The**

Position of Article

1. Noun से पहले
   जैसे –
   He has an umbrella.
   Noun
2. Adjective से पहले
   जैसे –
   Monika has a long stick.
   Adjective
3. Adverb + Adjective + Noun से पहले
   जैसे – She is a very beautiful girl.
   Adv. Adj. N.
4. All/both + double + ….. + Noun के बीच में
   जैसे – All the girls.
   Double the amount.

A and An का प्रयोग

- A/An का प्रयोग अनिश्चित Singular Noun से पूर्व करते हैं ।
  Eg:- I have a car.
  This is an orange.
- यदि किसी शब्द के उच्चारण की प्रथम ध्वनि व्यंजन हो तो → A, एवं स्वर हो तो → An
  जैसे –
  An umbrella [word में प्रथम अक्षर Vowel होने पर भी ध्वनि स्वर की है ।]
  A union [word में प्रथम अक्षर Vowel होने पर भी ध्वनि व्यंजन की है ।]
  A one rupee note [vowel होने पर भी ध्वनि व्यंजन की है ।]
  An honest man [व्यंजन होने पर भी ध्वनि स्वर की है ।]
- Vowel से प्रारम्भ होने वाले वाक्यों में an लगता है।
  An inkpot
  An apple
- जब u अक्षर 'यू' ही पढा जाऐ तो a लगता है ।
  A European
  A useful
  A uniform
- जब o अक्षर को 'व' पढा जाये तो a लगता है ।
  A one eyed boy
  A one handed girl
- जब h अक्षर 'अ' पढा जाऐ तो an लगता है ।
  An hair
  An M.A.
  An L.L.B
- जब किसी verb को noun के रूप में प्रयोग करते हैं तो उससे पहले A या An लगता है ।
  Ex:- He goes for a walk.
  She goes for a swim.
- जब Exclamatory sentence what या How से प्रारम्भ हो तो Singular countable noun से पूर्व A का प्रयोग होता है ।
  Ex:- What a hot day.
  How find a day.
- Singular countable noun से पूर्व
  Eg:- I have a pen.
  Exclamatory वाक्यों में what/how के बाद
  Eg:- What a grand building.

Toppersnotes Unleash the topper in you

- कुछ गिनती बताने वाले शब्द जैसे – hundred, thousand, million, dozen, couple से पहले 'a' लगता है ।

  Eg:- A dozen pencil were bought by her.
- Half से पूर्व 'a' का प्रयोग किया जाता है ।

  Eg:- $2\frac{1}{2}$ meter two and a half merter.
- कुछ विशेष Phrases में A/An का प्रयोग

  In a fix, in a hurry, in a nutshell, make a noise, make a foot, keep a secret, as a rule, at a stone's throw, a short while ago, at a loss, take a fancy to, take an interest in, take a liking, a pity, tell a lie.

Omission of A/An -

(a) Plural noun से पूर्व नहीं किया जाता है ।

Eg:- A boys have come. (×)

(b) Uncountable noun से पूर्व

'The' का प्रयोग :–

(1)

Name of rivers	The Ganga
News papers	The Amar Ujala
Unique things (अद्वितीय)	The Earth, The Moon
Historical building	The Taj Mahal
Superlative degree	The best
Holy books	The Ramayan
Post	The Secretory, The D.M.
Nationality	The Indian
Ordinal Numbers	The First, The Second
Musical Instrument	The Tabla, The Flute
Mountain	The Himalyas

(2) Cinema, Theatre, Circus, office, Picture, Station, bus stop से पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- My friend go to the theatre today.

(3) जब Proper noun या common noun बनाया जाता है तो The Article लग जाता है ।

Ex:- Kalidas is the Shakespeare of India.

(4) The का use किसी देश के नाम से पूर्व नहीं होता है but यदि country के नाम के साथ Republic/Kingdom/States जुड़े हो तो इससे पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex: - He visited India and United states. (×)

He visited India and the United states. (✓)

(5) Sky, Moon, World, Sea, से पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- The sky is dark and the moon is shining.

(6) जब Adjective का use noun की भाँति होता है तो उससे पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- Rich should help poor. (×)

The Rich should the help poor. (✓)

(7) जब Comparative degree से पूर्व कोई selection कराना हो तो उसके पूर्व The Article लग जाता है ।

Ex:- He is stronger of the two. (×)

He is the stronger of the two. (✓)

(8) जब कोई वस्तु Understood होती है तो उससे पूर्व 'The' का प्रयोग होता है ।

E.g:- Kindly return the book. (That I gave you)

Can you turn off the lights ? (The light in the room)

(9) Ordinal से पूर्व 'The' का प्रयोग किया जाता है । (First, second, third, …)

E.g:- The second chapter of this book is very difficult.

(10) Adjective 'same' एवं 'whole' के पहले और 'all' एवं 'both' के बाद article 'The' का प्रयोग होता है ।

Eg:- He is the same boy that met me in the market.

The whole period was wasted.

Omission of 'The'

(1) Name of games, Name of Subjects से पूर्व the article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- I play the cricket. (×)

I play cricket. (✓)

(2) Proper noun से पूर्व The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- Shakespeare was the greatest dramatist. (✓)

(3) Before Material Noun

Ex:- Gold is the most Precious metal. (✓)

The Tea grows in India. (×)

Tea grows in India. (✓)

Particular sens e में

Ex:- The tea of Assam is very famous. (✓)

Ex:- Water of the ganga is sacred. (×)

The Water of the Ganga is sacred. (✓)

(4) Before Abstract noun (भाववाचक संज्ञा)

Ex: - <u>The virtue</u> is its own reward. (×)

Virtue is its own reward. (✓)

Ex: - <u>The love</u> is a natural feeling. (×)

Love is a natural feeling. (✓)

Exception

Particular sense में

Ex:- <u>Honesty</u> of Ram cannot be doubted. (×)

Ex:- The honesty of Ram cannot be doubted. (✓)

He speaks the truth. (✓)

(5) Before languages :-

Ex:- <u>The english</u> is spoken all over the world. (×)

English is spoken all over the world. (✓)

Particular sense में

Ex:- He knows the Sanskrit language.

(6) School, college, home, church, temple, sea, burnt, bed, table, hospital, market, prison, court के पहले The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- I go to <u>the</u> bed early. (×)

Ex:- I go to bed early. (✓)

(7) Name of disease के पहले The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- He died of <u>the</u> cholera. (×)

Ex:- He died of cholera. (✓)

Note: - But the rickets, the plague, the flu, the mumps, the measles are correct.

(8) Regular meals के पहले The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- I take <u>the</u> breakfast. (×)

Ex:- I take breakfast. (✓)

Particular sense में

Ex:- The lunch that was served to the guests was delicious. (✓)

(9) Parts of body, mode of travel के पहले The article नहीं लगाते हैं ।

Ex:- The liver is the largest organ of human body. (×)

Ex:- Liver is the largest organ of human body. (✓)

Ex:- He will go there by the bus. (×)

Ex:- He will go there by bus. (✓)

(10) The name of relations के पहले The article नहीं लगाते है ।

Uncle/mother, father

Ex:- Father will go to Delhi tomorrow.

Toppersnotes
Unleash the topper in you